शोभना श्याम

ई-मेल-shobhanashubhi@gmail.com

खून के रंग

जब पहले पहल उसकी नौकरी कृषि विभाग में लगी था, तब सच्चाई और ईमानदारी उसके खून में बहती थी। उसका बचपन गँाव में बीता था सो ग्रामीणों विशेषकर किसानो के कठिन जीवन का स्वयं साक्षी था। उनके लिए कुछ करने के ज़ज्बे के साथ ही उसने कृषि क्षेत्र को अपना करियर चुना था लेकिन जैसे-जैसे परिवार की सरकारी नौकरी से जुड़ी अपेक्षाएं उसके सिर पर सवार होती गयी, वैसे-वैसे उसका ज़ज़्बा धूल चाटता गया। इधर बड़े होते बच्चों की नित नयी फरमाइशें उसका खून पीने लगी उधर उसने अपने पास काम लेकर आने वाले किसानों का खून चूसना शुरू कर दिया।

ग्रामीण कृषि विस्तार विभाग में तरक्की होने तक उसके मुँह खून लग चुका था। अब तो बिना चाय पानी पिए न उसका पैन कोई हस्ताक्षर करता न ही गर्म हुए बिना उसके हाथों से कोई फाइल सरकती। बोरवेल की हो या ट्यूबवैल की, हर सब्सिडी में उसका हिस्सा तय था। कुछ हजार रुपयों के लिए महीनों उसके दफ्तर के चक्कर काटते गरीब किसानों को खून के आँसू रुलाना अब उसकी दिनचर्या में शामिल था।

तपता जेठ हो या ठिठुरता माघ, दूर दूर से घंटों पैदल चलकर आने वाले गरीब उसके नित-नए बहाने सुनकर खून का घूँट पीकर रह जाते। कभी पनियाली आँखों से उसको तकते, कभी गिड़गिड़ाते और फिर आँसू बहाते लौट जाते । उसका खून तो पानी हो चुका था सो अब उसे न दया आती थी न शर्म।

कुछ दिनों से उसी के पैतृक गँाव का एक युवा किसान हाथों में रिश्वत की जगह गँाव के नाते की उम्मीद लिए उसके दफ्तर के चक्कर काट रहा था। उसकी सब्सिडी पास हुए पाँच महीने हो चुके थे मगर अब तक रुपये नसीब नहीं हुए। उसकी मेज पर आकर गिड़गिड़ाते और फिर घुड़की खाकर लौटते किसानों को देखकर आखिर उसका युवा खून उबाल पर आ गया। अगले दिन उस युवा किसान से रिश्वत लेते ही भ्रष्टाचार विरोधी दस्ते ने उसे धर दबोचा। उसके हाथ नोटों पर लगे केमिकल से रंगे थे। अब तो उसकी हालत 'काटो तो खून नहीं' वाली थी।

शोभना श्याम

यात्राएँ

"हैलो!"

"यार संजय, मैं बोल रहा हूँ, नवीन।"

"अरे नवीन, कैसे याद किया भाई?"

"संजय! तुझे याद है, कुछ महीने पहले जब मैं तेरे घर आया था, तो एक कुत्ते ने मुझे काट लिया था?

"अच्छी तरह तरह याद है नवीन। उसने तो और भी कई लोगों को काटा था, इसलिए हमने ...।"

"अरे वह आजकल हमारे मोहल्ले में लोगों को काटने का अपना शौक पूरा कर रहा है। मैं हैरान हूँ कि वह इतनी दूर मेरे मोहल्ले में कैसे पहुँच गया?"

"तेरे मोहल्ले में? अरे! वैसे एक अजीब खबर मेरे पास भी है, तेरे मोहल्ले में जो काला कटखना कुत्ता हुआ करता था, वो आजकल हमारी कालोनी की शोभा बढ़ा रहा है, और कालोनी में आने वाली मेड्स को निशाना बना रहा है।"

"तेरी कॉलोनी में? मगर हमने तो उसे नगर निगम वालों...।"

"अरे यार, जिसने तुझे काटा था, हमने भी तो उसे नगर निगम वालों से उठवाया था।"

"मगर हमने तो उन्हें ...।"

"वो तो हमने भी दिए थे।"

क़ायदा बनाम फायदा

"सुनो! इस नाम का तो कोई छंद नहीं होता, एडमिन इस का अभ्यास कर पटल पर लिखने के लिए कह रहे हैं।"

"तो लिख दो ना।"

"अरे! जो छंद होता ही नहीं, उसके अभ्यास का फायदा ?"

"एडमिन की संस्था से साहित्य भूषण का पुरस्कार, उनकी पत्रिका में नियमित प्रकाशन और..."

"और..?"

"कुछ समय में सब पता चल जाएगा।"